Manis Aurita शिकिम का साल ।
Macrophis' rhodon Plumbi color घास में रहने वाला सांप; तृण सर्प ।
Marsupialia थैली वाले जन्तुओं की श्रेणी ।
Mellivora बिज्जू ।
Mellivora Indica भारतीय बिज्जू ।
Mellivora Capensis मधु बिज्जू की यह जाति आफ्रिका में पाई जाती है । यह शहद का बड़ा प्रमी होता है । इसी से इसका दूसरा नाम (Honey-badger) अर्थात् मधु बिज्जू पड़ गया है ।
Membrane झिल्ली ।
Metamorphosis देह रूपान्तर; रूप परिवर्तन; भ्रूणावस्था से कीटावस्था में आने की अवस्था ।
Micropus Gigantus बड़ा भूरा कांगरू; कांगरू जाति में इसका अग्रगण्य स्थान है । यह आस्ट्रेलिया में सर्वत्र पाया जाता है ।
Milk teeth दूध के दांत ।
Minnow मोदक मत्स्य ।
Mitter नर मत्स्य ।
Mite कमाद्रिका ।
Milk snake दुग्ध प्रिय सर्प (इस जाति के सर्प वर्जिनिया में पाये जाते हैं,दूध पीने के लिये घरों में चक्कर लगाया करते हैं ।)
Monotremata एक छिद्री श्रेणी ।
Moschidae कस्तूरावंश; हरिण की वह जाति जिसके शरीर में कस्तूरी की थैली पाई जाती है ।
Mouse-deer पिसूरी ।
Mongoose नेवला, नकुल ।
Mouth मुख ।
Musk deer कस्तूरा; वह हिरण जिसके शरीर में कस्तूरी की थैली रहती है ।
Musk Ox कस्तूरी बैल; यह बैल उत्तरी अमेरिका में पाया जाता है । इसके शरीर से कस्तूरी जैसी सुगन्ध आती है, इसलिये यह कस्तूरी बैल कहा जाता है ।
Muscle पेशी ।
Muridae चूहावंश ।
Mus चूहा ।
Mus Decumanus घरेलू चूहा ।
Mus Rattus काला चूहा ।
Mus Brunneus पेड़ का चूहा ।
Mus Bandicota घूंस, माल्वा तथा राजपूताने में इसे "कोल" कहते हैं । इसका आकार चूहे से बहुत बड़ा होता है, और बड़े बड़े बिल खोदता है ।
Mungoos, Mungoose नेवला; नकुल ।
Mud-crab कीचड प्रेमी कीड़ा । यह समुद्र किनारे पर पाया जाता है ।
Museum अजायबघर ।
Mud fish कर्दम मत्स्य ।
Mullet मछली विशेष (यह झरनों या समुद्र के किनारों पर पाई जाती है ।
Myrmecobe आस्ट्रेलिया की गिलहरी ।
Myrmecobe Fasciatus चींटी भक्षक मर्मकोब; यह जन्तु आस्ट्रेलिया में पाया जाता है । इसका शरीर गिलहरी का सा और रंग कत्थई होता है ।
Myrmecophaga Jubata बड़ा चींटी खोर; दंत विहिन श्रेणी में यह सबसे बड़ा जन्तु है । उसके शरीर की लम्बाई लगभग चार फुट है । चींटियों पर यह अपना निर्वाह करता है । यह केवल दक्षिण अमेरिका में मिलता है ।
Mycetes चिल्लाने वाला बन्दर, इनकी आवाज गम्भीर और डरावनी होती है । जब इनका झुंड चिल्लाने लगता है तो सारा जंगल गूंज उठता है । इस जाति के बन्दर दक्षिण अमेरिका में पाये जाते हैं ।
Myriapod बहुपाद प्राणी ।

N

Nauphies प्राणियों की प्रथम लार्वा अवस्था।
Naia bungarus नाग राज।
Neck गर्दन।
Nerve नाड़ी।
Nesokia Indica छछुन्दर चूहा; हिन्दुस्तान के खेतों में यह चूहा सर्वत्र मिलता है। दक्षिण में इसे "कोक" कहते हैं।
Nemorhaedus सेरू। यह बकरे की एक जाति है। इस जाति के बकरे काश्मीर, सिकिम तथा हिमालय पर ६००० फुट की ऊंचाई से १२००० फुट तक के ऊँचे जंगलों में मिलता है।
Nemorhaedus gooral गुरल; यह भी बकरे की एक जाति है जो काश्मीर आदि देशों में पाई जाती है।
Nose नाक; नासिका।
Nostril नासारन्ध्र; नासिका रन्ध्र।
Nycticebus Tardigradus शर्मीली बिल्ली। यह छोटा सा जन्तु केवल पूर्वी बंगाल में होता है; वहां इसे "लज्जावन्ती वानर" भी कहते हैं।

O

Oesophagus अन्न नाली; पाकस्थली।
Oilgland तेल स्रावी ग्रन्थि; तेल ग्रन्थि।
Oligodon Subgriseus त्रिशर सर्प।
Omnivorous सर्व भक्षी।
Opossum थैली वाले जन्तु विशेष।
Opposom अपादायी।
Ophidian सर्प।
Ophidia सर्पों का वर्ग।
Opistholypha सर्प वर्ग।
Orang Outang वनमानुष।
Order वर्ग श्रेणी।
Organ इन्द्रिय; यन्त्र।
Organism जीव।
Osculum बहिर्मुख, बहिर्मुखी छिद्र।
Otaria Stelleri सामुद्रिक शेर।
Otler ऊद बिलाव।
Otaria Ursina सामुद्रिक भालू।
Ounce of Felis Uncia बरफ का चीता; यह जानवर बड़ा सुन्दर होता है। यह हिमालय पर लगभग ९००० फुट से १९००० फुट की ऊंचाई तक बरफ से ढकी चोटियों में मिलता है। भूतान में इसे "साह" कहते हैं।
Ovary डिम्ब ग्रन्थि।
Oviparous अंडज; वे प्राणी जो अंडों के द्वारा उत्पन्न होते हैं।
Oviduct डिम्बनाली।
Ovisac डिम्बस्थली, डिम्बकोष।
Ovis भेड़।
Ovis nahu भारल; यह एक जाति की भेड़ है जो कुमायूं गढ़वाल के पहाड़ों में पाई जाती है।
Ovis Ammon न्यान भेड़ की यह उपजाति हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों पर लगभग १५००० फुट की ऊँचाई पर मिलती है। इसके सींग बहुत मोटे होते हैं।
Ovis Aries घरेलू भेड़।
Ovis cycloceros उरियल; यह एक जाति की भेड़ है जो पंजाब के पहाड़ों में दिखलाई देती।
Ovum डिम्ब कोषाणु; आर्तव बीज, स्त्री का रजोरेणु।

P

Pachyoler mata मोटी खाल वाले ।
Pancreas क्लोम; क्लोम ग्रन्थि ।
Pancreatic duct क्लोम प्रणाली ।
Pancreatic juice क्लोम रस ।
Parasite परोपजीवी ।
Parasitic परजीवित्व ।
Parasitism परोपजीवित्व, परजीवित्व ।
Parthenogenesis कानीनता ।
Panther तेंदुआ ।
Paradoxuras musanga ताड़ की बिल्ली ।
Paradoxurus Bonder चिन्नार (चिन्नार)
Perissodactyle विषम संख्यक खुरवाले जन्तु ।
Peramelidoe खरगोश के समान जन्तु विशेष, जो आस्ट्रेलिया में पाये जाते हैं ।
Pectinal फणीदार मछली ।
Pharynx ग्रासनिका; गलकोष ।
Pink मोदक मत्स्य ।
Pigment र क ।
Pisces मत्स्य वर्ग (इसमें "शार्क" और " रे " आदि मछलियों का समावेश होता है)
Pisciculture मत्स्य संवर्धन विज्ञान; कृत्रिम उपायों से मछलियों को पालने तथा बढ़ाने की विद्या ।
Plantigrade पद तलचर ।
Placental नालोत्पन्न; नाल से उत्पन्न होने वाले ।
Plasma रक्त रस ।
Polymorphism बहुरूपत्व, बहवाकृति; विभिन्नाकृति ।
Polyembryony बहुभ्रुणत्व ।
Poison gland विष ग्रन्थि ।
Potoroos चूहे कांगरू ।
Potoroos Tridactylus साधारण चूहे कांगरू ।
Porculia Salvania छोटा सुअर, सुअर की यह बहुत ही छोटी जाति है । नेपाल में इसे सानो दनेल कहते हैं ।
Portax Pictus नील गाय; हरिण वंश की यह बहुत बड़ी जाति है । यह केवल भारतवर्ष में पाई जाती है । इनके शरीर में हरिण और गाय दोनों के जाति लक्षण दिखलाई देते हैं । ये जन्तु मध्यभारत में तथा सतलज तथा यमुना नदियों के बीच बहुतायत से पाये जाते हैं ।
Pool Fish सरोवर मत्स्य ।
Pollack } पोलक मत्स्य (यह कांद जाति की मछलियों में से है ।)
Pollock }
Polyodontophis Subpunctatus धब्बेदार सांप ।
Premolars दूध की डाढ़ ।
Primates प्रधान भागीय ।
Proboscidea गजवंश, सूंडवाले जानवरों का इसमें हाथी का समावेश होता है ।
Proteroglypha विषारी सर्प वर्ग ।
Protoplasm आदि जीवत्व ।
Protozoa आद्य प्राणी; आदि जीव ।
Prawn जलचर प्राणी विशेष ।
Presbytis लंगूर; काले मुंह का बन्दर ।
Presbytis Entellus लंगूर विशेष ।
Pteryopthalmus गोलाक्षी ।
Pro-cyon Lolor रेकून ।
Pseudopodium क्षण पद; उपपाद ।
Pseudotetramera } असच्चतु; संधि प्राणी वर्ग ।
Pseudotrimera }
Pteromys Petaurista उड़ने वाली भूरी गिलहरी ।
Pteropodidae फलाहारी वंश का चमगीदड़ ।
Pteropus Edwardsi बादुर ।
Pterosauria उड़नशील रेंगने वाले प्राणी । यह प्राणी जाति अब पृथ्वी से नष्ट हो गई ।
Pupa पूर्णाङ्ग अवस्था प्राप्ति की प्रथमावस्था ।
Purse Crab दीर्घकाय केंकड़ा, यह सीलोन, मारशिल्स आदि द्वीपों में पाया जाता है । यह जमीन के अन्दर रहता है और फलों पर—खास तौर से—नरियल पर अपना गुज़र बसर करता है ।
Python अजगर ।
Python Molurus अजगर ।

Q

Quadrumana चौहस्ते ।
Queenfish मत्स्य राणी । यह मछली अमेरिका केलिफो-
निया में पाई जाती है । इसकी पीठ आसमानी रंग की होती है ।

R

Rabit खरगोश ।
Rectum मलाशय; मल नाली ।
Red blood corpuscle लोहित कणिका ।
Regeneration पुनर्जन्म; नवोत्पत्ति; पुनरुत्पत्ति ।
Remora गति विरोधक मत्स्य (यह मछली जहाज की गति विधि में हरकत पहुँचाने के लिये मशहूर है ।)
Reptilia रेंगने वाले प्राणियों का वर्ग ।
Reproduction जनन ।
Reproductive Organ जननेन्द्रिय ।
Reptiles उरंगम; वे प्राणी जो पेट के बल पर रेंगते हैं ।
Retina अक्षिपट ।
Retractile Claws संकुचन शील पंजे ।
Rhinoceros गैंडावंश ।
Rhinoceros Indicus भारतीय बड़ा गैंडा ।
Rhinoceros Javanicus जावा का गैंडा ।
Rhinoceros Sumatianus सुमात्रा का गैंडा ।
Rhinoceros Africanus अफ्रीका का गैंडा ।
Ringed Snake वलयाकार सर्प ।
Rodent कर्तदंती, खुतरने वाला जन्तु ।
Rock-Snake चट्टानों में रहने वाला सर्प ।
Rotalina चक्र रन्ध्री ।
Rotifers चक्रधारी ।
Royal Fish शाही मत्स्य ।
Ruminants रोमान्थकार ।

S

Sac कोष, थैली ।
Saliva लाला ।
Salivary duct लाला प्रणाली ।
Salivary gland लाला गण्ड; लाला ग्रन्थि ।
Samophis longifrous दीर्घमान सर्प ।
Saprophyte मृतजीवी; मृत प्राणियों के शरीर पर निर्वाह करने वाला ।
Saprophytism मृत जीवित्व ।
Salmon मत्स्य विशेष (यह मच्छी स्वादिष्ट मांस के लिये मशहूर है ।)
Sawfish दांतेदार थूथनवाली मच्छी ।
Sauropterygia रेंगने वाले प्राणी विशेष (इस जाति के प्राणियों की गर्दन लम्बी रहती थी । अब यह जाति पृथ्वी से उठ गई है ।)
Sciuridae / Sciuyridae } गिलहरी वंश ।
Sciurus malabari मलाबार की जंगली गिलहरी ।
Sciurus maximus कराट ।
Sciurus Palmarum धारीदार गिलहरी । इस उपजाति के जानवर भारतवर्ष में सब जगह मिलते हैं । भारत को छोड़ कर अन्यत्र कहीं भी यह नहीं मिलती ।
Secundates द्वितीय भागी ।
Sea-dog सील मत्स्य (सस्तन) ।
Sea-snake समुद्रीय सर्प ।
Semnopithecus nasalis बड़ी नाक का बंदर ।
Self-fertilization स्वगर्भाधान ।
Serpent सांप ।
Sex लिंग ।
Sexual लैङ्गिक ।
Sexual reproduction लैङ्गिक जनन; स्त्री पुरुषों के संयोग से होने वाला जनन ।
Shark नक्रमत्स्य (यह मच्छी तीस से लगा कर चालीस

फुट तक लम्बी होती है। यह दूसरी जाति की मछलियों पर अपना उदर निर्वाह करती है। मनुष्यों पर भी यह आक्रमण कर बैठती है। इस के कलेजे से तेल निकाला जाता है।

Shoal मत्स्य समुदाय।

Shrimp भींगा मछली।

Simia Satyrus वनमानुष विशेष।

Simotes arnensis ढिशर सर्प।

Sirenia दरयाई गाय।

Skeleton कंकाल।

Skin त्वक्; चर्म।

Skull खोपडी।

Snake stone सर्प मणि; नाग मणि।

Snake सर्प।

Snapping turtle जल कछुआ (यह अमेरिका मे पाया जाता है। यह अपने जबड़े से भक्ष्य प्राप्त करता है।)

Sole मछली विशेष।

Soft shelled turtle मृदु कवची कछुआ (यह एशिया अफ्रिका तथा उत्तर अमेरिका मे पाया जाता है।)

Soroidae छुछूंदर वंश।

Sorex Caeruleseens भारत का साधारण छुछूंदर।

Sorex Vulgaris युरोप का छुछूंदर।

Sperm शुक्राणु।

Species जाति; उपजातियाँ।

Spermatozoon शुक्राणु।

Spleen प्लीहा।

Squapata सर्प वर्ग।

Starfish तारक मत्स्य।

Stomach जठर; उदर; पाकस्थली।

Structure रचना; शरीर गठन।

Sturgeon fish कंटकयुक्त मत्स्य।

Sub family antilopinae हरिण उपवंश।

Sub-Indicus भारती वनैला सुअर।

Sus Bengalensis बंगाल का सुअर।

Susneel gherrieusis नीलगिरी का सुअर।

Sus Scrofa साधारण वनैला सुअर।

Symboisis अन्योन्य जीवीत्व; सहयोगिता।

Symmetry समता।

T

Taurine गोवंश।

Taurus युरोप के बिना कुबड़ के गाय बैल।

Tendon कन्डरा।

Terrapin कछुआ।

Testis शुक्राणु ग्रन्थि।

Theromorpha सस्तन भूचर रेंगनेवाले प्राणी (इस जाति के प्राणी अब पृथ्वी से नष्ट हो गये हैं।)

Thorax वक्षस; छाती।

Thunder snake गर्जन सांप।

Thylacenus आस्ट्रेलिया का बाघ।

Thyroid गल ग्रन्थि।

Tiger Cat बाघ डशा, मच्छ बाग रूल; यह बंगाल मे अधिकता से पाई जाती है।

Tiger बाघ; यह भी बिल्ली वंश का प्राणी है।

Tissue धातु।

Tortoise साधारण कछुआ।

Torpedo टार्पेडो मत्स्य (एक प्रकार का मत्स्य विशेष जिसके स्पर्श से बिजली सरीखा धक्का लगता है)।

Trachea श्वासनली, श्वास मार्ग।

Tropidonotus Piscator ढेंडू।

Tront मीठे पानी में रहने वाली एक जाति की मछली।

True molars वास्तविक डाढ़।

Tupaia पेड़ों का छछूंदर।

Tupaia Peguana शिकिम का वृक्षवासी छछूंदर।

Turbot मछली विशेष (यह खाने के काम में लाई जाती है। इसका वजन ३० से ४० पौंड तक होता है।

Turtlet समुद्र का छोटा कछुआ।

Typlops बिल में रहने वाले ऊर्ध्व दंत सांप।

U

Ungulata एक खुरी ।
Ungulate खुरदार जन्तु ।
Ureter गविनी ।
Urethra मूत्र नाली ।
Ursidae भालूवंश ।
Ursus भालू ।
Ursus Pro-cyou रेकून ।
Ursus Cercoleptes किन काजू ।
Ursus Nasua कोटी ।
Ursus Tebetanus तिब्बत का काला भालू ।
Ursus Malayanus मलाया का काला भालू ।
Ursus Arctos भूरा भालू ।
Ursus Isabellinus हिमालय का भूरा भालू ।
Ursus Maritimus ध्रुव का भालू ।
Uterus जरायु ।

V

Vacuole क्षुद्र कोष ।
Vent गुह्य प्रदेश ।
Viper विषारी सर्प ।
Viviparous जरायुज ।
Viverridae सिवेट वंश ।
Viverra Malaccensis मुश्क बिल्ली; महाराष्ट्र मे इसे "कस्तूरी" और बंगाल में "गंध गोकुल" कहते हैं ।

W

Waders कर्दमचारी ।
Whale देवमत्स्य (सस्तन) ।
Wheel-animalcule चक्र प्राणक ।
Whip-snake पतला सांप (यह सांप वृक्षों पर पाया जाता है) ।
White blood Corpuscle श्वेत रक्त कणिका ।
Wing पर; पक्ष ।
Wolf-dogs भेड़िया सदृश कुत्ते ।
Wood-tortoise कछुआ विशेष (यह उत्तर अमेरिका में पाया जाता है) ।

Y

Yak वनचोर ।
Yolk अंडपति ।

Z

Zebra जेवरा ।
Equus Zebra पहाड़ी ज़ेवरा ।
Equus Burchella बर्चेल का जेवरा ।

THE

MOST COMPREHENSIVE & MOST UP-TO-DATE

English-Hindi Dictionary

BY

Mr. Sukhsampattirai Bhandari, M. R. A. S.

OPINIONS

OF

Leading Scholars & Prominent Personages.

Offer of Encouragement from H. E. The Viceroy.

Assistant Private Secretary to his Excellency the Viceroy in his D. O. No 4941 G. M. 23 August 1933 writes—

"His Excellency Offers you all encouragement in your great work."

The Hon'ble Lt. Colonel, G. D. Ogilvie, C. I. E., C. S. I. Agent to the Governer General in Central India. (Now A.G.G. in Rajputana)

I was very pleased to see your lexicon. *It is a monumental work.*

Mahamahopadhyay Dr. Ganganath Jha, M.A., D. Litt Vice-Chancellor of the Allahabad University.

Mr. Sukhsampattirai Bhandari has shown me the press copy of what he calls "The Anglo-Hindi Dictionary," though from what I have seen of it, it appears to be more like an 'encyclopaedia' than a 'Dictionary'. The work is very interesting and is bound to be very useful for students of all subjects who are specially interested in Hindi. The work is a stupendous one and it is a great credit to Mr. Bhandari to have conceived of the undertaking. I hope the reading public will justify his courage and enable him to publish the book which I feel sure will be a land-mark in Hindi literary history. The writer carries my best wishes for the success of his undertaking.

Dr. Sir P. C. Roy, D. Sc., Ph D., C. I. E. Calcutta.

Mr. Sukhsampattirai has undertaken a gigantic but highly laudable task, namely, the compilation of an "Anglo-Hindi Dictionary." He has secured the services of a body of experts, who will contribute on their own special subjects. It will also include scientific, and technical terms; these latter being based on Sanskrit, are of use alike to the Hindi, Bengali, Guzrati and Marathi speaking people. A work of this description is likely to grow to colossal proportions and will involve an expenditure of considerable outlay. I hope our Rajas, Maharajas and Raises as also all lovers of Hindi literature will come forward with generous help.

Dr. Radhamukand Mukarjee M.A.P.R.S., Ph.D., Professor and Head of the department of the Indian History, Lucknow University.

Mr. Sukhsampattirai Bhandari, who is the author of a comprehensive work on the history of Indian States, has projected another work on a very comprehensive scale-an Anglo-Hindi Dictionary From the pages of the Ms. he has shown me, I think it will be a unique work of its kind. The Dictionary will have within its purview all technical terms of Sanskrit origin in different branches of knowledge-the physical science, philosophy, law, economics and politics and also suggested Hindi Correspondents to some of the latest words of English. The work will thus open up a vast store house of information for students of Hindi who should all now wish it a speedy completion. I hope it will win financial support from the Princes, some of whom are the warmest lovers of Hindi and known patrons of learning. The project is indeed too vast to be an individual undertaking and its success depends on the co-operation of both brain and bullion.

Dr. A.C. Woolner C.I.E., M.A., Ph. D., Vice-Chancellor Punjab University.

Mr. Sukhsampattirai Bhandari, Editor "Kisan", Indore City, has shown me a part of the manuscript of an Anglo-Hindi Dictionary. The work has been compiled on an elaborate scale and it is certainly much more complete than any dictionary from English into an Indian language which I have ever seen. The author has written in Hindi a History of Indian States which has been well spoken of and he is other-wise a writer of repute. Presuming that the renderings in Hindi of a very complete English dictionary are accurate, as they appear to be from a short inspection of a section of the book, I have no hesitation in saying that Mr. Bhandari's dictionary will form a valuable book of reference for students and writers who use the Hindi language.

Dr. Narayan Prasad Asthana M. A. LL. B., Ph. D.
Former Vice-Chancellor of the Agra University.

Mr Sukhsampttrirai Bhandari of Indore has been for sometime past engaged on a stupendous work of compiling the "Anglo Hindi Dictionary." which from the brief study I have made of the manuscript quite encyclopaedic in its nature. It is a unique work of its kind and will prove of inestimable assistance to all those interested in translating books on moral and physical sciences of Europe into Hindi. In my opinion it is an all India-venture which should receive due recognition and encouragement. Private and public libraries will be the richer for the book, students of English and Hindi in their higher stages will derive immense benefit from it, and scientific terminology will receive a great impetus. Hindi scholars will welcome the publication of such a useful work and the public at large will find in it a mine of information which would not be otherwise available. Mr. Bhandari has my entire sympathies in his new venture and a well-known writer and journalist as he has been, he is sure to succeed in his attempt.

PRESS REVIEWS.

BOMBAY SENTINAL
IN AN ILLUSTRATED ARTICLE WRITES:—
COLOSSAL AND UNIQUE
LEXICOGRAPHICAL COMPILATION.

"Mr. Sukhshampattirai Bhandari of Indore, a Scholar of considerable reputation and an author of several Hindi books is engaged in the compilation of a comprehensive Anglo Hindi Dictionary, the first volume of which will see the light of the day in the second week of May."

"The work is of a colossal character. The Dictionary will be the greatest existing lexicon from English into an Indian language. It has been compiled under Mr. Bhandari's supervision by a committee of leading scholars some of whom enjoy international reputation in their particular field of learning."

"This lexicon covers a wider field than most existing dictionaries in all the vernaculars, because it contains technical words of various branches of physical science, political science, economics, social science, mathematics, astronomy, botany, geology, medical science, philosophy, religion etc."

"Through literary experts thousands of Hindi synonyms of scientific words have been coined where the fund of Hindi words was found deficient in expression."

"Every attempt has been made to bring the shades of English words into their Hindi equivalents. English phrases and idioms have also been fully dealt with. Thousands of words which have been coined after the great war, have also been included in it"

"In doing this the editors had to consult practically all the latest English dictionaries They have also taken help from the existing Anglo Bengali, Anglo-Marathi, Gujrathi and Urdu dictionaries. A work of this description was certainly found to grow to colossal proportions and so it has been completed in a voluminous manuscript of twenty thousand pages."

"The lexicon is very highly spoken of by scholars like Pandit Madan Mohan Malviya Dr. Ganganath Jha, Vice-Chancellor of the Allahabad University, Dr. A C Woolner, Vice-Chancellor of the Punjab University, Dr. Narayanprasad Asthana the former Vice-Chancellor of the Agra University, Dr. Radhakumud Mukerjee, Dr Sir P. C. Roy, and others"

Pandit Madan Mohan Malaviya was extremely pleased with the work and holds a very high opinion for it, as is apparent from his letter of appreciation in which he observes—" I have been extremely pleased to see portions of your Anglo-Hindi Dictionary. You have earned the gratitude of the lovers of Hindi by having prepared this stupendous work. I wish you success in your high endeavour to publish such an Encyclopaedic Dictionary."

According to Dr. Ganganath Jha this encyclopaedic work will be a land-mark in the history of Indian literature Dr. Radhakund Mukerjee considers it to be unique work of its kind which will open up a vast store of information for students of Hindi. Dr. Sir P. C. Ray appeals to the Rajas, Maharajas, Raisas and also all lovers of Hindi literature to come forward with a generous help to complete the gigantic and highly laudable work.

Dr. Narayan Prasad Asthana, former vice-Chancelor of the Agra University, while styling the work as an All India venture, writes—"It is a unique work of its kind and will prove of inestimable assistance to all those interested in translating book on moral and physical sciences of Europe into Hindi. In my opinion it is an All-India venture which should receive due recognition and encouragement. Private and public libraries will be richer for the book, students of English and Hindi in their higher stages will derive immense benefit from it, and scientific terminology will receive a great impetus. Hindi scholars will welcome the publication of such a useful work & the public at large will find in it a mine of information which would not be otherwise available. Mr. Bhandari has my entire sympathies in his new venture and a well-known writer and journalist as he has been, he is sure to succeed in his attempt."

"The leading English dailies of India have all admitted it to be the first work of its kind in India. Besides these all the leading Hindi and Gujrati papers have published lengthy articles on the importance and utility of the work."

"The scientific terminology will be complete in three volumes, which will involve an expenditure of considerable outlay. The whole scheme will cost more than Rs. 75,000. The complete scientific terminology will be ready within 15 months The first volume as stated above will be published in the second week of May."

"All those interested in the work should correspond with the author, in his present address, Dictionary Publishing House, Brahmapuri, Ajmer."

STAR

Dated 16th April 1937.

A Daily paper of Ahemadabad Writes;—

"AN EPOCH MAKING BOOK."

With increased facilities for printing and rapidly growing market books, good and bad, on every subject and of every variety, flood the bazzar. Most are of mush-rooms growth, sinking into oblivion after enjoying a precarious existence for a season. Some have a perennial interest or sound workmanship and hence last a generation or two. But only a few posseses intrinsic worth or permanent value, and of these, it is rare to find a book uniting skill, learning and utility, and directly helping nation-building.

And so we are glad to welcome the Anglo-Hindi Dictionary compiled by Mr. Sukhsampattirai Bhandari M.R.A.S. It is a costly work carried out with immense labour, patient research and systematic thoroughness. So comprehensive is its plan and so exhaustive the mass of materials that it is more like an encyclopaedia than a dictionary.

At any time a book like this would be commendable. But at a time when nationalities of the Great Indian continent are being welded into a homogeneous whole, this book has special and enhanced value. A common language-not a mere *Lingua franca*,-is the first essential of a complete fusion of various races. This has been correctly visualised and the Nation's workers have vigorously carried on the propagation of Hindi as the common language of the country.

A great advance would be possible if Hindi could supplant English in higher studies. But difficulties of technical terminology came in the way. These difficulties are now removed, and it would be now quite possible to have Hindi as an optional substitute for English.

Thus the book comes at a right moment and fulfils a vital need. We press the public to accord it a full patronage, and trust that the learned compiler will be recompensated for his creditable achievement.

TRIBUNE

Dated the 18th January, 1930.

Mr. Sukhsampattirai Bhandari who is a Hindi author with a very creditable record and great literary ambition, has recently completed his comprechensive Anglo-Hindi Dictionary. A cursory perusal of the *mss* gives one the impression that *it is much more complete and exhaustive than any other dictionary from English into an Indian language.* The compiler has given under each word its derivation and the different meanings. Justice has been done to scientific and technical terms medical, biological, phylosophical, political, astronomical, legal, etc. This work is highly spoken of by such eminent scholars as Dr. A. C. Woolner, Vice Chancellor Punjab University and others.

TO-DAY (Benares).

We have seen an advance copy of the Anglo-Hindi dictionary that Mr. Sukh Sampatti Rai Bhandari, the well known Hindi writer, intends very soon to bring out Several scholars have expressed their appreciation of the work which is really very creditable to Bhandariji and his learned colleagues. It is an exhaustive dictionary containing besides words in daily use, technical terms connected with politics, philosophy and the various branches of Science. It will, we are sure, prove a very useful book, but we should very much like the learned editor to bring out a smaller edition as well He has already spent 20,000/-over it and the publication will not cost less than another 60,000/. The complete work might thus become rather dear for the ordinary reader. We congratulate all those who have co operated to prepare such an eminently serviceable book

---

Prominent English Dailies like Indian Daily mail, Pioneer, and Bombay Chronicle, honoured the compiler by publishing his photograph with the following remarks of appreciation for his Anglo Hindi Dictionary.

THE INDIAN DAILY MAIL

Dated the 24th Nov., 1930.

Mr. Sukhsampatti Rai Bhandari of Indore who has recenty completed his Anglo-Hindi Dictionary, *the first of its kind in India.* Mr. Bhandari is a well-known Hindi scholar and journalist.

THE PIONEER

Dated the 22nd August 1931.

Mr. Sukhsampatti Rai Bhandari of Indore has recently completed a Comprehensive Anglo Hindi Dictionary which is described as a *land-mark in the history of Hindi literature.*

THE BOMBAY CHRONICLE

Dated 9th November, 1930.

Mr Sukhsampatti Rai Bhandari a well-known Hindi author of Indore has just completed his Anglo Hindi Dictionary, the *biggest lexicon ever compiled from English into an Indian language.*

हिन्दी समाचार-पत्रों की कुछ सम्मतियां

प्रयाग का सुप्रसिद्ध अर्द्ध-साप्ताहिक पत्र "भारत" अपने २६ दिसम्बर के सम्पादकीय लेख में लिखता है—

हिन्दी साहित्याकाश में थोड़े समय तक चमक कर छिप जाने वाले नक्षत्र अनेक हैं। परन्तु एक बार छिप कर दुबारा दर्शन देने वाले नक्षत्र बहुत थोड़े। इनमें भी उनकी संख्या तो और भी थोड़ी है जो दूसरी बार प्रकट होकर पहले से अधिक प्रकाशमान होते हैं। इन्हीं अल्पसंख्यक प्रकाशमान नक्षत्रों में हिन्दी के पुराने साहित्यसेवी, आदरणीय विद्वान् श्री सुखसम्पत्ति राय भंडारीजी भी हैं। जिन्होंने आपकी रचित इतिहास, राजनीति आदि विषयों की पुस्तकें पढ़ी हैं वे आपको एक गंभीर तत्तान्वेषक के रूप में अच्छी तरह जानते हैं। भंडारीजी हिन्दी भाषा-भाषी प्रान्त के निवासी न होते हुए भी जिस लगन और अध्यवसाय से हिन्दी की सेवा में लगे हुए हैं उसका प्रमाण उनकी बनाई दर्जनों पुस्तकें हैं। उसके लिए प्रत्येक हिन्दी भाषी को उनका कृतज्ञ होना चाहिये। अभी तो नहीं, पर निकट भविष्य में जब देश में शिक्षा की वृद्धि के साथ गंभीर विषयों के अध्ययन की प्रवृत्ति अधिकाधिक बढ़ेगी तब भंडारीजी की रचनाएँ प्रेम से पढ़ी जायेंगी। अभी तो नहीं पर निकट भविष्य में जब हिन्दी-साहित्य के इतिहास ग्रन्थ की रचना होगी तब भंडारीजी उन व्यक्तियों के स्थान के अधिकारी होंगे जो राजकीय कार्यों में संलग्न रहते हुए भी, अपने समय का सदुपयोग कर ज्ञान का क्षेत्र विस्तृत करने में लगे रहते हैं।

हमने इधर कई वर्षों से भंडारी की कोई नवीन कृति नहीं देखी थी, पर हमें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप बहुत दिनों से एक मूल्यवान पुस्तक लिखने में लगे हुए हैं। यह पुस्तक एक विशालकाय अंग्रेजी हिन्दी-कोष ग्रंथ है। यह ग्रंथ बड़े आकार के कोई पन्द्रह हज़ार पृष्ठों में समाप्त हुआ है। इसमें अंग्रेजी के प्रायः डेढ लाख शब्दों का अर्थ अंग्रेजी में और उनके पर्य्यायवाची शब्द हिन्दी में दिए गए हैं। जो यह जानते हैं कि अंग्रेजी का शब्द भंडार कितना बड़ा और हिन्दी का कितना छोटा है उन्हें यह समझने में देर न लगेगी कि भंडारी जी को हिन्दी मे वैज्ञानिक; क़ानून सम्बन्धी, व्यापार विषयक, राजनीति आदि के हज़ारों शब्दों को ढूंढने और आवश्यकता पड़ने पर उनकी रचना करने में कितनी कठिनाई पड़ी होंगी और कितना परिश्रम पड़ा होगा। इस प्रकार की पुस्तक हमारे लिए कितने महत्व की और कितनी उपयोगी है यह बतलाने की बात नहीं। आधुनिक युग में हिन्दी में भिन्न-भिन्न विषयों की पुस्तकें लिखी जा रहीं हैं। बहुत से विषय हमारे लिए बिल्कुल नए हैं और उनके उपयुक्त शब्द हमारी भाषा मे अब तक व्यवहृत नहीं होते रहे। उपर्युक्त कोष ग्रन्थ हमारे इस कार्य में सहायता दे सकेगा।

परन्तु इस प्रकार की पुस्तक तो हमारे नित्य के काम की भी है। हम अपनी ही बात कहते हैं। हिन्दी के समाचार पत्रों को नित्यप्रति अंग्रेज़ी के अनुवाद करने पड़ते हैं। राजनीति सम्बन्धी कुछ संस्थाएँ और तत्सम्बन्धी अनेक शब्द हिन्दी में नहीं हैं। समवाची शब्द न होने के कारण कभी कभी हमें अंग्रेज़ी शब्द ही देना पड़ता है जो पाठकों की समझ में नहीं आता। कभी-कभी हमें एक अंग्रेज़ी शब्द का भाव प्रकट करने मे हिन्दी में पूरा वाक्य ही बनाना पड़ता है। इस प्रकार हमें जो कठिनाई होती है, हम समझते हैं, अन्य क्षेत्रों में काम करने वाले वकीलों, डाक्टरों, वैज्ञानिकों आदि को भी होती होंगी। इस कठिनाई को दूर करने में यह ग्रन्थ सहायक होगा।

परन्तु रोज़मर्रा के काम के लिए इतने बड़े आकार का ग्रन्थ सब नहीं रख सकेंगे। हमारी सम्मति है कि इस ग्रन्थ का एक संक्षिप्त संस्करण भी निकाला जाय जिससे वह अधिक लोकोपयोगी हो सके।

आदरणीय विद्वान डाक्टर गंगानाथ झा ने भण्डारी जी के इस ग्रन्थ को देखकर आश्चर्य प्रकट किया है कि यह एक संस्था का कार्य एक व्यक्ति ने कैसे कर दिखाया। निश्चय ही भंडारीजी का यह विशाल ग्रन्थ उनके चिर दिन के अथक अध्यवसाय का परिणाम है और इसके व्ययसाध्य प्रणयन में उन्होंने जो त्याग किया है आशा है हिन्दी-जनता उसका सम्मान करेगी।

कानपुर का सुप्रख्यात साप्ताहिक पत्र "प्रताप" अपने १६ नवम्बर सन् १६३१ के सचित्र सम्पादकीय लेख में लिखता है—

इन्दौर के प्रसिद्ध साहित्य-सेवी हमारे चिर परिचित श्रीयुत सुख सम्पत्ति राय भण्डारी के नाम से हिन्दी संसार खूब परिचित है। अनेक ग्रन्थों का प्रणयन करके भण्डारीजी ने हिन्दी साहित्य की वृद्धि की है। इधर आपने देशी राज्यों के इतिहास सम्बन्धी एक विशाल ग्रन्थ की रचना करके तत्सम्बन्धी एक बड़ी भारी कमी को पूरा किया है। लेकिन इससे भी अधिक महत्वपूर्ण कार्य, जिसे भण्डारीजी ने सम्पादित किया है, यह है कि आपने अपने पास से बीस हजार रुपया खर्च करके अनेक विद्वज्जनों की सहायता से, हिन्दी भाषा में एक विशाल अंग्रेजी-हिन्दी शब्द कोष की रचना की है। यह विशाल कोष शब्दार्णव फुलसकेप आकार के हस्तलिखित २० हजार पृष्ठों में समाप्त हुआ है। हमने इस ग्रन्थ की पाण्डु-लिपि देखी है। यत्र-तत्र हमने इसे पढ़ा भी है। हम निःसंकोच यह कह सकते हैं कि आज तक हिन्दी भाषा में ऐसे उपयुक्त, सुन्दर, सर्वाङ्ग पूर्ण एवं विशुद्ध एङ्गलो-हिन्दी शब्दकोष की रचना हुई ही नहीं। श्रीयुत सुख सम्पत्ति रायजी भण्डारी द्वारा निर्मित यह कोष इतना उपयोगी है कि इसके सम्बन्ध में विशेष प्रशंसा करने की आवश्यकता ही नहीं है। भण्डारीजी ने एक महान् कार्य्य सम्पादित किया है। इस कोष में राजनैतिक, आर्थिक, आयुर्वेदिक, वैज्ञानिक, रासायनिक भूगर्भशास्त्र विषयक, शरीर शास्त्र विषयक, ज्योतिष, कानून, धर्म्म, गणित आदि शास्त्र सम्बन्धी सब शब्दों का समावेश है और अकारादि क्रम से अंग्रेजी भाषा के सब शब्द तो इसमें हैं ही। केवल इतने ही विवरण से पाठक समझ सकते हैं कि यह विशाल ग्रन्थ कितना उत्तम और सर्वाङ्गपूर्ण होगा। स्वयं भण्डारीजी ने हमें यह बतलाने की कृपा की है कि इस शब्दकोश में लग भग डेढ़ लाख शब्दों का समावेश है। भण्डारीजी अनेक विद्वानों को यह ग्रन्थ दिखला चुके हैं। जिन-जिन महानुभावों ने इसे देखा है, वे मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा करते हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वाईस चान्सलर डाक्टर गंगानाथ झा ने इस कोष को विश्व-कोष नाम से पुकारा है। काशी के आचार्य्य श्री भगवानदासजीने भी इस ग्रंथ की बड़ी प्रशंसा की है। आचार्य श्री प्रफुल्लचंद्र राय ने यह ग्रंथ भारतवर्ष की समस्त आर्य्य भाषाओं के लिए उपयोगी बतलाया है। अनेक समाचार पत्र भी इस महद्ग्रंथ की प्रशंसा कर चुके हैं। इतने उपयोगी और भीमकाय ग्रंथ के निर्माण की कल्पना जिस व्यक्ति के मस्तिष्क में उपजी वह व्यक्ति हमारे शत-शत साधुवाद और हमारी कृतज्ञता का अधिकारी है। हम श्रीयुत सुख सम्पत्तिरायजी भण्डारी के प्रति, इतना वृहत्कोश निर्माण करने के लिए हिंदी भाषा-भाषी जन समूह की ओर से तथा अपनी ओर से कृतज्ञता प्रकट करते हैं। इतने बड़े कोष की छपाई में पर्याप्त धन राशि व्यय होगी। हम भारतवर्ष के हिंदी भाषा-भाषी राजा-महाराजाओं तथा सेठ साहुकारों से प्रार्थना करते हैं कि इस महान् कार्य में श्री भण्डारीजी की सहायता करके यश और गौरव के भागी बनें। एक बार फिर हम श्रीयुत सुख सम्पत्तिरायजी भण्डारीजी को, उनके इस प्रचण्ड सफल प्रयत्न के लिए, हृदय से साधुवाद देते हैं। भगवान् भण्डारीजी को चिरायु करें और उन्हें हिंदी भाषा की श्रीवृद्धि करने का सुअवसर प्रदान करते रहें।

स्वतन्त्र दीपावली विशेषांक १६८८ के अंक में लिखता है:—

हिन्दी-जगत् इन्दौर-निवासी श्री० सुखसम्पत्तिरायजी भण्डारी से भली प्रकार परिचित है। हिंदी भाषा में आप कोई तीन दर्जन छोटे-बड़े ग्रन्थ लिख चुके हैं। इनके द्वारा आपने स्वार्थ और परमार्थ दोनों की सिद्धि की है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा द्वारा आपको यश भी मिला है और लक्ष्मी भी। देशी राज्यों के सम्बन्ध में लिखी गई पुस्तक से ही आपको कोई ३५ हजार की आमदनी हुई है। केवल इन्दौर राज्य से इसके लिए आपका १५ हजार प्राप्त हुआ है। आपकी पुस्तकों का अनुवाद गुजराती, उर्दू आदि भाषाओं में भी हुआ है। इन ग्रन्थों में सफलता प्राप्त करने के बाद आपने इन द्वारा प्राप्त धनराशि का सदुपयोग एक ऐसे स्तुत्य प्रयत्न में किया है, जिसका कि परिचय हम अपने सहृदय पाठकों से कराना

आवश्यक समझते हैं। यह स्तुत्य प्रयत्न है हिन्दी में एक वृहद शब्दकोष तयार करना। यद्यपि इसका अभी कोई स्थिर नामकरण नहीं हुआ है, किन्तु इसको 'विशाल अंग्रेज़ी हिन्दी शब्दकोष' कहा जा सकता है। हिन्दी-मराठी संस्कृत अंगरेजी आदि भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डितों के एक मण्डल की व्यवस्था करके आपने सुदीर्घ प्रयत्न से इस शब्दकोष को तयार किया है। इसके कुछ हस्तलिखित पृष्ठों को देखने, पढ़ने और परीक्षा करने का हमको अवसर मिला है। फुलसकेप साइज के कोई २० हजार हस्तलिखित पृष्ठों में यह महान् ग्रन्थ पूरा हुआ है। छपने के बाद यह ग्रन्थ संभवतः ७-८ हजार पृष्ठों में पूरा होगा। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें न केवल प्रतिदिन के व्यवहार के शब्दों का ही संग्रह किया गया है, किन्तु राजनीति, अर्थ-शास्त्र, तर्क (दर्शन) शास्त्र, मनोविज्ञान, भौतिक-विज्ञान, रसायन-शास्त्र, गणित, जीव विज्ञान, वनस्पति शास्त्र, वैद्यक (डाक्टरी) शरीर-विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, धर्म शास्त्र कानून आदि के भी यथा सम्भव सब शब्दों का भी समावेश किया गया है। सब मिलाकर कोई डेढ़ लाख शब्दों का संग्रह होगया है। अब तक के हिंदी बङ्गाली, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं में प्राप्त किसी शब्दकोष को नहीं छोड़ा गया है, जिसकी कि इसके सम्पादन में पूर्ण सहायता नहीं ली गई है। इसलिये यह शब्दकोष अब तक के समस्त भारतीय भाषाओं में प्राप्त शब्दकोषों में सबसे अधिक विशाल, सबसे अधिक सामयिक और सबसे अधिक पूर्ण है। अनेकों शब्द तो इसी शब्दकोष के लिये गढ़े गये हैं, जिससे कि इस शब्दकोष द्वारा हिन्दी भाषा की न्यूनता भी कई अंशों में पूरी हो सकेगी।

जिस किसी विद्वान् या पत्र सम्पादक ने इसको देखा है, उसी ने इसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। डाक्टर गङ्गानाथ झा ने इसको हिन्दी साहित्य का विशाल स्मारक कहा है। आचार्य (सर) राय ने इसको हिन्दी भाषा-भाषियों ही के लिए नहीं, किन्तु अन्य भाषा-भाषियों के लिये भी उपयोगी बताया है। पञ्जाब यूनीवर्सिटी के वाइस चांसलर डा० एस० सी० वुलनर, इलाहाबाद के डा० बेनीप्रसाद और बङ्गाल के डा० सुनीतिकुमार चटर्जी आदि ने भी इस प्रयत्न की सराहना की है। बम्बई के 'डेली-मेल, की दृष्टि में यह ग्रन्थ भारतीय साहित्य में सबसे पहिला महान् यत्न है। बम्बई क्रानिकल' की राय में यह सबसे बड़ा कोष है। 'भारत' इसको एक मूल्यवान ग्रन्थ कहता है और सलाह देता है कि इसका एक संक्षिप्त संस्करण भी प्रकाशित किया जाना चाहिये। 'अभ्युदय' ने एक मुख्य लेख में इसको 'प्रशंसनीय उद्योग' कहा है और लिखा है कि "हमें विश्वास है कि हिन्दी ही नहीं वरन् अन्य देशी-भाषा-भाषी संसार इस कोष का समुचित आदर करेगा" इन पत्रों के अतिरिक्त ट्रिब्यून, टू-डे, पायोनियर, अर्जुन, वीणा, राजस्थान-संदेश और हिन्दू संसार आदि ने भी इस प्रयत्न को स्तुत्य बताया है। जो कार्य किसी संस्था के करने का था, उसको अकेले भण्डारीजी ने कर दिया— इस पर डाक्टर गङ्गानाथ झा, महामना मालवीयजी ने भी महान् आश्चर्य प्रकट किया है। सचमुच यह आश्चर्य का विषय है और जब भण्डारीजी से यह मालूम होता है कि यह कार्य केवल २० हजार रुपये में सुसम्पन्न हुआ है तो और भी अधिक आश्चर्य होता है। इसकी छपाई के लिये ४०-५० हजार का खर्च कूंता गया। इतने महान् तथा स्तुत्य प्रयत्न के लिये हम भण्डारीजी की बार बार सराहना करते हैं और यह चाहते हैं कि इस सम्बन्ध में उनकी इच्छा पूर्ण हो और यह महान् ग्रन्थ पुस्तकाकार में शीघ्र ही हिन्दी साहित्य के गगन-मण्डल में देदीप्यमान हो।

काशी का सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र "आज" मिति सौर २६ कार्तिक सं० १६८८ की संपादकीय टिप्पणी में लिखता है—

अब तक कोई अच्छा अंग्रेजी हिन्दी कोष बना ही नहीं है। लड़कों के लिए डिक्शनेरियाँ बनी हैं, उनमें भी अच्छी एक भी नहीं है। ऐसी दशा में हमें यह लिखते बड़ी प्रसन्नता होती है कि इंदौर के श्री सुख सम्पत्तिराय भंडारी ने एक बहुत बड़ा अंग्रेजी-हिन्दी कोष सम्पादित किया है। दो साल पहले हमने इसका कुछ भाग इंदौर में देखा था और अभी भंडारीजी दो ढाई मन का पोथा यहां दिखा गये हैं। हम आपकी इस कृपा के लिये कृतज्ञ हैं। कोष का कुछ भाग

हमने देखा है और उससे कह सकते हैं कि परिश्रम सफल और प्रशंसनीय है। कहीं-कहीं अन्य भाषा भाषियों के परिश्रम का परिचय भी मिल जाता है, पर आशा है कि संशोधन के बाद यह गंध भी जाती रहेगी। इस कोष में दर्शन, रसायन, द्रव्यविज्ञान, धर्म-धर्म आदि भिन्न-भिन्न शास्त्रों के पारिभाषिक शब्दों के भी अर्थ दिये गये हैं और पर्यायवाची शब्द बनाने का भी यत्न किया गया है। वैज्ञानिक शब्दों के सम्बध में हमारी सूचना यह है कि, भारत की सब भाषाओं में एक ही शब्द होने चाहिये। यूरोपियन भाषाओं में भी वैज्ञानिक शब्द एक होते हैं। इससे उन शास्त्रों के अध्ययन में बड़ी सहायता मिलती है। दूसरी बात यह है कि सर्वत्र नये शब्द न गढ़कर, जहां तक सम्भव हो संस्कृत साहित्य से पुराने समानार्थक शब्द ही लेने का यत्न करना चाहिये। जहां ऐसे शब्द न मिलें वहीं नये गढ़ने चाहिये। भंडारीजी ने अब तक जो काम किया है उनसे आपके अध्यवसाय और श्रमशीलता की प्रशंसा ही करनी पड़ती है। अर्द्ध फुलस्केप के कोई १०,००० पन्ने आपने लिखवा डाले हैं। अनुमान किया जाता है कि इस कोष में कोई डेढ़ लाख शब्द होंगे। आशा है यह कोष शीघ्र ही छपकर हिन्दी प्रेमियों के सामने मासिक रूप में आने लगेगा।

दैनिक हिन्दू-संसार १६ फरवरी १६३० के अंक में लिखता है—

हिन्दी-जगत् सुप्रसिद्ध लेखक श्री० सुखसम्पत्तिरायजी भण्डारी से भली भांति परिचित है। हिन्दी भाषा में अब तक आपने २०-२२ पुस्तकें लिख कर साहित्य की बड़ी सराहनीय सेवा की है। आपकी पुस्तकों का हिन्दी में अच्छा आदर है और भारत दर्शन, देशी राज्यों का इतिहास आदि कई पुस्तकें बहुत उत्तम हैं। आपकी कुछ पुस्तकों का अनुवाद उर्दू आदि में भी हुआ है। पिछले कुछ वर्षों से आप हिन्दी के एक बड़े कोष की रचना करने में लगे हुए थे। विद्वानों के एक मंडल की व्यवस्था करके आपने बड़े अध्यवसाय से यह कार्य किया और हिन्दी प्रेमियों को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि यह कोष ग्रन्थ अब पूरा हो गया है। इस ग्रंथ में अंग्रेजी शब्दों का अनुवाद हिन्दी में किया गया है और साथ ही अंग्रेजी शब्द का उच्चारण भी हिन्दी भाषा में लिख दिया गया है। लाहौर कांग्रेस के लिए जाने के समय लगभग १॥ मास पूर्व श्री० भण्डारीजी ने हमें इस कोष ग्रन्थ की हस्त लिखित प्रति दिखलाई थी, जिसे देख कर यह अनुभव होता है कि छपने पर यह बड़े आकार के ७००० पृष्ठों से कम में न पूरा होगा। श्री भण्डारीजी ने इस कोष की तैयारी में बहुत खर्च किया है और यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि अब तक के इस तरह के जितने कोष ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं उनमें से यह सबसे अधिक पूर्ण होगा। इस कोष में दो बड़ी विशेषताएं हैं। पहली विशेषता इसकी व्यापकता है। साहित्य, दर्शन, मनोविज्ञान, रसायन, साधारण विज्ञान, विद्युत् शास्त्र, वैद्यक, भौतिक विज्ञान, ज्योतिष, अर्थ शास्त्र, गणित, भूगोल, कृषि, कानून, राजनीति, इंजीनियरिंग, जीव विज्ञान, आदि सभी विषयों के शब्दों का समावेश किया गया है। दूसरी विशेषता इसकी यह है कि अंग्रेजी शब्दों का उपयुक्त पारिभाषिक शब्द देने की पूरी चेष्टा की गयी है और इसमें श्री भण्डारीजी को सन्तोषजनक सफलता भी हुई है। हम इस स्तुत्य प्रयत्न के लिए श्री भण्डारीजी को बधाई देते हैं। इस उत्तम कोष ग्रन्थ के प्रकाशित होने के लिये श्री भण्डारीजी उद्योग कर रहे हैं। हमें आशा है कि हिन्दी-प्रेमी उनके इस शुभ उद्योग में सहायक होंगे और बड़ी उत्सुकता से इसकी प्रतीक्षा करेंगे।

दैनिक भारतमित्र १२-११-३१ के अंक में लिखता है:—

राष्ट्रभाषा हिन्दी के इस विकास युग में उसके सर्वाङ्गीण साहित्य को सुपुष्ट एवं समर्थ बनाने की जितनी बड़ी आवश्यकता है यह मातृ भाषा के शुभ चिन्तकों से अविदित नहीं है। यह सन्तोष का विषय है कि हिन्दी भाषा के विद्वानों और साहित्य सेवियों का ध्यान हमारे साहित्य के भिन्न-भिन्न अंगों की पूर्ति की ओर आकृष्ट हुआ है और वे अपने इस सद्प्रयत्न में पूरी तत्परता के साथ संलग्न हो रहे हैं। हम बहुत दिनों से एक साङ्गोपाङ्ग अंग्रेज-हिन्दी कोष की आवश्यकता का अनुभव कर रहे थे। वैज्ञानिक, दार्शनिक, राजनीतिक तथा अर्थ शास्त्र सम्बन्धी विषयों के अंग्रेजी ग्रन्थों का उल्था करने और इन विषयों पर स्वतंत्र ग्रन्थ लिखने के लिए हिन्दी में अब तक ऐसे कोष की कमी थी जिसमें पारिभाषिक शब्दों के अर्थ मिल सकें। हमें प्रसन्नता है कि इन्दौर के सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार श्रीयुत सुख सम्पत्तिराय भण्डारी ने एक सुविशाल अंग्रेजी-हिन्दी कोष का सम्पादन कर इस कमी को पूरी करने की चेष्टा की है। हमने इस कोष का कुछ अंश देखा है और हम यह निस्संदेह रूप से कह सकते हैं कि यह विशाल ग्रन्थ हिंदी साहित्य का बहु मूल्य रत्न होगा। इसमें नित्य प्रति काम में आने वाले शब्दों के अतिरिक्त दर्शन शास्त्र, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगर्भ शास्त्र, भौतिक विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान, गणित आदि अनेक शास्त्रों के पारिभाषिक शब्द और उनके ठीक-ठीक पर्यायवाची अर्थ दिए गये हैं। विशेषज्ञों के द्वारा उक्त शास्त्रों के शब्दों के अर्थ निर्माण करवाये गये हैं। इस कोष में लगभग डेढ़ लाख शब्द रहेंगे। इस ग्रंथ की हस्तलिखित प्रति के २१००० पृष्ठ हैं। इससे हमारे पाठक इस ग्रन्थ की विशालता और भण्डारीजी के साहित्यिक साहस का परिचय पा सकते हैं। प्रयाग विश्व-विद्यालय के वाइस चांसलर डाक्टर गंगानाथ झा, पंजाब विश्व-विद्यालय के वाइस चांसलर डाक्टर वुल्नर, सर पी० सी० राय, डाक्टर सुनीति कुमार चटर्जी, डाक्टर बेनीप्रसाद, सर गोपीनाथजी पुरोहित सरीखे प्रकाण्ड विद्वानों ने इस ग्रंथ की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। बम्बई के 'इंडियन डेलीमेल' ने इस कोष को भारतीय साहित्य का सर्व प्रथम ग्रंथ कहा है। बाम्बे क्रानिकल, 'ट्रिब्यून' 'टुडे' आदि अंगरेजी पत्रों ने भी इस ग्रन्थ की और भण्डारीजी के साहस की बड़ी सराहना की है। हिंदी के कई प्रतिभाशाली पत्रों ने इसके गौरव को बढ़ाया है। वास्तव में यह ग्रंथ लिखकर श्री भण्डारीजी ने राष्ट्र भाषा हिन्दी की बहुमूल्य सेवा की है। हम अपने सहयोगियों के साथ इस बात में सहमत हैं कि एक संस्था का कार्य भण्डारीजी ने व्यक्तिगत रूप से कर दिखलाया है। हमारी हार्दिक कामना है कि यह ग्रंथ शीघ्र ही प्रकाशित हो कर राष्ट्र भाषा की एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति करे। हम हृदय से भण्डारीजी की सफलता चाहते हैं और हमें आशा है कि हिंदी संसार आपके इस महान् साहित्यिक प्रयत्न का समुचित आदर करेगा।

विजय (कलकत्ता) १५-११-३१ के अंक में लिखता है :—

इंदौर के सुप्रसिद्ध साहित्यसेवी श्रीयुत सुखसम्पत्तिरायजी भण्डारी ने अनेक अच्छी पुस्तकें लिखकर मातृ-भाषा की बड़ी सेवा की है, पर इस बार आप एक अमूल्य सेवा से हिंदी को शीघ्र ही ऐसा लाभ पहुंचाने वाले हैं जो चिरस्मरणीय रहेगी। आपने एक अंग्रेजी-हिन्दी कोष तैयार किया है। यह कोष बहुत बड़ा है। इसमें राजनीतिक, विज्ञान, ज्योतिष और दर्शन शास्त्रों के अतिरिक्त यंत्रशास्त्र, रसायन शास्त्र, भौतिक विज्ञान, जीव विज्ञान, कृषि-शास्त्र, सृष्टि-शास्त्र आदि-आदि सभी शास्त्रों और विज्ञानों के ठीक-ठीक अर्थ दिये गये हैं। इस वृहद् कोष में डेढ़ लाख से भी अधिक शब्द होंगे। यह काम इतना बड़ा था कि वास्तव में यह किसी संस्था के करने लायक था। भण्डारीजी की कृपा से कोष स्वयं हमने देखा है। यह देखकर हमें हर्ष के साथ आश्चर्य भी हुआ कि वे अकेले इस काम को करने में कैसे समर्थ हुए। अवश्य ही इन्हें इस काम के लिए अनेक विद्वान् रखने पड़े, जिनके लिए उनके हजारों रुपये अबतक खर्च हो चुके हैं। यह कोष

उन्होंने महामना मालवीयजी, डा० गंगानाथ झा, सर पी० सी० राय तथा अन्य कितने ही विद्वानों को दिखाया है, जिन्होंने उनकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। उसके छपवाने में भी प्रायः पचास हजार रुपये से कम खर्च न होंगे। उनके इस भागीरथ प्रयत्न की सराहना करते हुए हम अन्त में भण्डारीजीसे एक प्रार्थना अवश्य करेंगे, वह यह कि इस उपयोगी कोष का एक सस्ता संस्करण भी अवश्य छपवायें जिससे सभी लोग उसे खरीद सकें। नागरी प्रचारिणी पत्रिका का कोष चाहे जितना भी उपयोगी हो, पर उसका मूल्य अधिक होने से उसे हर एक आदमी नहीं खरीद सकता। हमें आशा है कि भण्डारीजी इसका भी ध्यान रखेंगे।

स्वाधीन भारत (बम्बई) १२–१–३४ के अंक में लिखता है:—

यह लिखते हुए प्रसन्नता होती है कि इन्दौर के सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी तथा अनेक 'स्टेण्डर्ड' पुस्तकों के लेखक, श्रीयुत् सुखसम्पतिरायजी भण्डारी ने हिन्दी भाषा में एक विशाल अंग्रेजी–हिन्दी-शब्द कोष तैयार किया है। यह विशाल शब्दार्णव फुल्सकेप के आकार के हस्त लिखित २० हजार पृष्ठों में समाप्त हुआ है। इस कोष में राजनीतिक, आर्थिक आयुर्वेदिक, वैज्ञानिक, रासायनिक, भूगर्भशास्त्र विषयक, शरीर विज्ञान, गणित, जीव विज्ञान, धर्मशास्त्र, कानून आदि सम्बन्धीय शब्दों का समावेश किया गया है। इस प्रकार सब मिला कर कोई १॥ लाख शब्दों का संग्रह किया गया है। श्री भण्डारीजी ने इसे तैयार करने में अब तक कोई २० हजार रुपये व्यय किये हैं। अनेक भाषाओंके महान् विद्वानों की सहायता ले कर आप ने इसे पूर्ण किया है।

श्री भण्डारीजी का परिचय करानेकी आवश्यकता नहीं,आप स्वयं हिंदी संसार में परिचित हैं। आपने अब तक, अनेक पुस्तकें लिख के हिन्दी की बड़ी सेवा की है। कुछ समय पहले की बात है, कि जब आपने देशी राज्यों के संबंध में एक विशाल इतिहास प्रकाशित किया था। इस ग्रन्थ की रचना करनेके बादही आपने कोषकी ओर अपना ध्यान आकृष्ट किया, आज वह भी लिख के तैयार होगया है। श्रीयुत् भण्डारीजी ने बड़े बड़े विद्वानों को यह ग्रंथ दिखाया है और सभी सज्जनों ने इस के भूरि–भूरि प्रशंसा की है। सच ही भण्डारीजी ने अपने अथक परिश्रम और अर्थ–व्यय से एक बहुत बड़ी कमी की पूर्ति की है। यदि यह ग्रंथ छप कर तैयार हो जायगा, तो हम कह सकते हैं, कि जब तक हिन्दुस्थान रहेगा, हिंदी और हिंदी बोलने वाले रहेंगे, तब तक आपकी यह अमर कृति रहेगी और हमारी भावी संतान के लिये एक बहुमूल्य वस्तु होगी। अब छपने का प्रश्न सामने है। इसके प्रकाशित होने में कम से कम ५०) हजार रुपये का खर्च है। हम हिंदी भाषा-भाषी, तथा हिंदी प्रेमी राजा महाराजाओं तथा सेठ साहूकारों से प्रार्थना करेंगे, कि वह भण्डारीजी की सहायता करें। यह प्रसन्नता की बात है, कि हमारे देशी नरेश अब हिंदी से प्रेम करने लगे हैं। यह कम गौरव की बात नहीं है कि बड़ौदा-नरेश ने आगामी १९३५ से अपने राज्य में सब कारबार, लिखा पढ़ी हिंदी भाषा में ही करने की घोषणा की है। हम बड़ौदा नरेश के इस संकल्प और स्वदेश–भाषा-प्रेम के लिये उन्हें हृदय से बधाई देते हैं। हम भंडारीजी को राय देंगे कि वह बड़ौदा नरेश से मिलें। हमें आशा और पूर्ण विश्वास है कि श्रीमान् महाराजा साहब उनके इस परिश्रम की दाद देंगे और शीघ्र ही इस कोष के प्रकाशित होने में पूर्ण सहायता करेंगे। हमारी प्रबल इच्छा है कि शीघ्र ही यह विशाल ग्रंथ प्रकाशित हो कर हिंदी साहित्य के विकास में पूर्ण उपयोगी बने। भंडारीजी की इसके लिये जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

अर्जुन (तारीख १५ जुलाई सन् १९३७)

हिन्दी साहित्य में एक सर्वथा नया प्रयास

भन्डारी जी की 'ऐंग्लो-हिन्दी डिक्शनरी'

हिन्दी के प्रख्यात लेखक श्री सुखसम्पत्तिराय भण्डारी एम० आर० ए० एस०, कुछ वर्ष से एक सर्वथा नये प्रयास में संलग्न थे। अब उस प्रयास का परिणाम 'दी ट्वेण्टिएथ सेन्चरी ऐंग्लो-हिन्दी डिक्शनरी' के रूप में प्रकट हो गया है। पुस्तक का नाम सुन कर अनेक पाठकों को यह भ्रम होना सम्भव है कि यह भी अनेक डिक्शनरियों की भांति कोई ऐसी डिक्शनरी होगी जिसमें अंग्रेजी भाषा के शब्दों का अर्थ हिंदी में लिखा गया होगा। परंतु यह डिक्शनरी वस्तुतः साधारण डिक्शनरी न हो कर एक प्रकार की इनसाइक्लोपीडिया अथवा ज्ञान-कोश है, जिसमें विविध विषयों के प्रचलित और अप्रचलित अंग्रेजी शब्दों की हिन्दी में व्याख्या की गई है। यह बात सर्वथा अभूत पूर्व है। जो सज्जन अंग्रेजी भलि भांति जानते हैं उनके भी यह पुस्तक बड़े काम की है क्योंकि साधारण अंग्रेजी डिक्शनरियों में भी विविध विषयों के पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या इस प्रकार नहीं की जाती।

वस्तुतः यह 'डिक्शनरी' अनेक 'डिक्शनरियों' का एकत्र संग्रह है। राजनीति, आयुर्वेद, व्यापार, अर्थशास्त्र, विज्ञान कानून आदि विविध विषयों के तमाम अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों का, अक्षरानुक्रम से संग्रह करके उस विषय के विभाग में उनकी हिन्दी भाषा में व्याख्या कर दी गई है, और इसी लिये इस पुस्तक को हमने कई 'डिक्शनरियों' का संग्रह कहा है।

ऐसा प्रयास केवल हिन्दी में ही नहीं, हमें जहाँ तक ज्ञात है, अन्य भी किसी भारतीय भाषा में अभी तक नहीं किया गया। और इस लिये यह 'डिक्शनरी' न केवल हिन्दी-भाषियों के, बल्कि भारतीय मात्र के काम की वस्तु हो गई है। गुजराती, मराठी, बंगला, तामिल, तेलगु आदि भाषाओं के बोलने वाले भी इस पुस्तक से उतना ही लाभ उठा सकते है, जितना कि हिन्दी-भाषी। हमें ज्ञात हुआ है कि इस पुस्तक का यह मूल्यवान उपयोग समझ कर ही गुजरात और महाराष्ट्र के सैंकड़ों पुस्तकालयों ने इस पुस्तक को मंगवाया है।

सर प्रफुल्लचन्द्र राय, डा० राधाकुमुद मुखर्जी, पं० मदनमोहन मालवीय आदि विद्वान पुरुषों ने, और गुजराती मराठी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के विविध पत्रों ने भी इस पुस्तक की प्रशंसा की है।

अभी तक इसकी एक ही जिल्द तैयार हो पाई है परन्तु वही लगभग १००० पृष्ठों की हो गई है। भंडारीजी का विचार इस पुस्तक को सर्वांगपूर्ण बनाने का है। इस लिये वह एक जिल्द तैयार हो जाने पर भी, उसको बाजार में, अभी केवल इस कारण नहीं ला रहे हैं कि उनका विचार पुस्तक में एक ऐसा परिशिष्ट और जोड़ देने का है जिसमें मुख्य संग्रह से छूटे हुए शब्द सम्मिलित कर दिये जायं। हम भंडारीजी के प्रयत्न की हृदय से सफलता चाहते हैं। इस पुस्तक की एक विशेषता हम को यह भी लगी है कि इसके कारण राष्ट्र-भाषा हिंदी भारत की प्रांतिक भाषाओं के बीच अपना सिर गौरव से ऊँचा कर सकेगी। पुस्तक मिलने का पता—डिक्शनरी पब्लिशिंग हाउस, अजमेर और इन्दौर।